'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक १०७ | वाराणसी, शनिवार, १९ सितम्बर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

ऊधमपुर (कश्मीर) ३-९-'५९

सेवा का जिम्मा स्वयं उठायें और शुद्ध हृदय से सेवा करें

स्वराज्य-प्राप्ति के पहले कुछ सेवक थे, जो लोगों में जाकर कुछ न कुछ सेवा-कार्य करते थे। लेकिन जैसे हम मकान बनवाने के लिए किसीको ठीका देते हैं, वैसे ही अब हमने सेवा के ठेकेदार बनाये हैं। समाज-सेवा के ठेकेदार सरकार और सरकारी नौकर और धर्म-सेवा के ठेकेदार मुल्ला, भिक्षु, पुजारी, पुरोहित।

भगवान हृदय देखता है

सेवा की एजेन्सी बनाकर हम उससे फारिग हो गये हैं। इस समय सियासी जमातों के लोग सिर्फ ऊधमपुर में ही नहीं, बल्कि सारे देश में कुछ ऊधम मचाते हैं। लेकिन उनमें सेवा की वृत्ति नहीं है। भगवान हृदय देखता है, उसे अन्दर की पहचान है, वह बाहर का ढोंग नहीं देखता है। कौन शख्स दिल खोलकर प्यार से दान देता है, कौन दबाव से देता है और कौन दिखावे के लिए देता है, कौन सही लोक-सेवा करता है, कौन फायदा उठाने के लिए करता है और कौन सिर्फ भगवान को राजी करने के लिए, अपनी चित्त-शुद्धि के लिए करता है—यह परमात्मा से छिपा नहीं है। सेवकों की पहचान जैसे जनता को होती है, वैसे परमात्मा को भी होती है। सबका वहाँ हिसाब होता है। सिर्फ बाहरी काम का नहीं, बल्कि हृदय-शुद्धि से किये हुए काम का भी परमात्मा के पास हिसाब होता है।

वेश्या स्वर्ग में, साधु नर्क में!

पुराणों में एक मशहूर कहानी आती है। एक थी वेश्या। वह व्यभिचार से पैसा कमाती थी। उसीके दूकान के सामने एक भक्त का मकान था, जहाँ रोज भजन मण्डली इकट्ठा होती थी और भजन चलता था। वह वेश्या और भक्त दोनों एक ही दिन मरे। उनको ले जाने के लिए एक हवाई जहाज भगवान विष्णु की तरफ से आया और दूसरा यमराज की तरफ से। एक स्वर्ग ले जानेवाला था और दूसरा नर्क को। भगवान विष्णु की तरफ से आया हुआ हवाई जहाज वेश्या के घर के सामने उतरा। वह वेश्या की आत्मा को बिठाकर स्वर्ग की तरफ ले गया। यमराज की तरफ से आया हुआ हवाई जहाज भक्त के घर के सामने उतरा और वह उसकी आत्मा को बिठाकर नर्क की तरफ ले जाने लगा। जब भक्त को मालूम हुआ कि उसे यमराज के हुक्म से नर्क की तरफ ले जा रहे हैं तो उसने कहा कि "यह अजीब बात है कि जो वेश्या रात-दिन बुरा काम करती थी, उसे भगवान विष्णु के हवाई जहाज में बिठाया और मेरे जैसे रोज भजन करनेवाले को यमराज के हवाई जहाज में बिठाया। इसमें जरूर वैसी कुछ गलती हुई है, जैसी कभी-कभी हिंदुस्तान में डाक पहुँचने में होती है।" यमराज के दूतों ने कहा कि "गलतियाँ आपके यहाँ, हिन्दुस्तान में, पाकिस्तान में, कश्मीर में और दूसरे मुल्कों में होती होंगी। लेकिन हमारे यहाँ तो कोई गलती नहीं हुआ करती है।" भक्त ने कहा कि "मैं नहीं समझा आपका हिसाब।" इसपर यमदूतों ने कहा "नीचे देखो, क्या तमाशा हो रहा है?" भक्त ने नीचे देखा, वहाँ उसकी लाश को जुलूस के साथ स्मशान ले जा रहे थे, 'राम-कृष्ण हरि' बोल रहे थे, खूब जय-जयकार कर रहे थे, उसे चंदन की लकड़ी से जलाने की बातें कर रहे थे और उधर वेश्या की लाश को कौन उठाये, इसकी फिक्र थी। इधर से कुत्ता आया और वेश्या की लाश का टुकड़ा काटने लगा। यह उसने देखा तो कहा 'वेश्या की लाश का बुरा हाल हो रहा है, और मेरे देह का जुलूस निकाला जा रहा है।' यमदूत ने कहा 'ठीक ही हो रहा है। तुमने देह से पुण्य किया था, इसलिए तुम्हारे देह की इज्जत, जय-जयकार हो रही है। वेश्या ने देह से बुरा काम किया था, इसलिए उसकी देह का बुरा हाल हो रहा है। लेकिन दोनों का मन कैसा था? वेश्या काम तो करती थी, लेकिन सामने तुम्हारे मकान पर भजन चलता था तो उसका ध्यान उसी तरफ जाता था और वह सोचती थी कि मैं कैसी दुराचारिणी हूँ। पेट के लिए बुरा काम करती रहती हूँ। वह भक्त कैसा पवित्र है, भजन करता है! इस तरह उसका दिल तुम्हारे भजन में था। वेश्या के घर में व्यभिचारी आते थे तो तुम्हारा ध्यान उस तरफ जाता था और तुम सोचते थे कि वे लोग कैसे आनंद में हैं, भोग-विलास कर रहे हैं। मैं ताल, मृदंग, वीणा लेकर भजन करता हूँ, लेकिन वास्तव में ऑब्जेक्टिवली आनंद उसीको हासिल हो रहा है, मुझे तो सिर्फ खयाली आनंद ही मिल रहा है। इस तरह तुम्हारा दिल वेश्या की तरफ था। भगवान के दरबार में देह की उतनी महिमा नहीं, जितनी मन की है। भगवान ने मन देखकर सजा या जजा दी और देह देखकर भी दी। देह और मन दोनों को अपना-अपना फल मिल गया। तब अब आश्चर्य किस बात का हो रहा है?

www.vinoba.in

नाम के लिए काम या काम के लिए काम !

इस कहानी से मैं कहना यह चाहता हूँ कि सेवा वह होती है, जो हृदय को शुद्ध करके की जाती है। जो खूब दिखावा करके ऊपर-ऊपर से की जाती है, वह सेवा नहीं है। उससे दिल को तसल्ली नहीं होती है। लोग थोड़ा-सा काम करते हैं तो चाहते हैं कि बाबा के साथ उनका फोटो निकले। किसी सियासी इदारे के सेक्रेटरी से अपने सालभर के काम की रिपोर्ट पेश करने के लिए कहो तो वह फौरन पचास पन्ने की रिपोर्ट पेश करेगा। उससे जो कुछ बुरा काम हुआ है, वह तो लिखता नहीं, भला काम हुआ हो, वह लिख रखता है। वह लिखेगा कि फलाने दिन हम हरिजन बस्ती देखने गये थे, फलाने दिन मीटिंग के लिए श्रीनगर गये थे। लेकिन किसी माँ से पूछो कि तुमने अपने बच्चे की सेवा की, उसकी रिपोर्ट पेश करो तो वह कहेगी कि 'मैंने किया, ही क्या ? मैंने कुछ भी हिसाब नहीं रखा है। मैंने जो किया वह प्यार के लिए किया है, उसकी क्या रिपोर्ट दूँ ?' माँ रिपोर्ट नहीं दे सकती। वह अपने बच्चे के लिए इतना काम करती है कि उसका लफ्जों में बयान भी नहीं हो सकता। लेकिन सेक्रेटरी थोड़ा-सा काम करता है तो झट रिपोर्ट तैयार करता है। फिर लोग उसे धन्यवाद देते हैं तो उसका पुण्य खाली हो जाता है, काम का सदुद्देश्य खत्म हो जाता है।

पार्टियों का तमाशा

कल एक सियासी जमातवाले भाई ने हमसे कहा कि 'तुम्हारा तरीका ठीक नहीं है। इधर-उधर भीख माँगने से क्या होगा ? हमारे हाथ में सत्ता आने दो, फिर हम फौरन जमीन का बँटवारा कर देंगे।' वे सोचते नहीं कि सत्ता हाथ में कैसे आयेगी। क्या सिर्फ हुकूमतवालों की बुराई करने से उनके हाथ में सत्ता आ जायगी ? अगर वे बुराई न करें तो उनको मौका नहीं मिलेगा, इसलिए ये लोग अल्लाह से प्रार्थना करते होंगे कि हुकूमतवाले बुराई करें।

हुकूमतवाली जमात का भी यही हाल होता है। हुकूमत करनेवाले सोचते हैं कि जो कोई अच्छा काम हो, उसे हम कर डालें। दूसरों को साथ लेकर करेंगे तो उनकी पार्टी का वजन बढ़ेगा और उनका वजन बढ़ा तो अगले चुनाव में हमारे लिए खतरा पैदा होगा। इंद्र को हमेशा ऐसा ही डर रहता था। कोई तपस्वी तपस्या करने लगता तो इन्द्र घबड़ा जाता था। क्योंकि वह सोचता था कि अगर उसकी तपस्या सफल हो जायगी तो इंद्रासन पर वही बैठेगा और मुझे आसन खाली करना पड़ेगा। इसलिए कोई तपस्या करता तो किन्हीं सुन्दर स्त्रियों को भेजकर इन्द्र उसके रास्ते में रोड़ा अटकाने की कोशिश करता था। तपस्वी की तपस्या भंग हुई तो इन्द्र खुश हो जाता था। एक भला आदमी गिरा तो उसमें इन्द्र को खुशी क्यों होनी चाहिए ? लेकिन वह सोचता था कि किसीका पुण्य न बढ़े, तभी हमारा इन्द्रासन बिलकुल महफूज रहेगा। उसी तरह सियासी पार्टीवाले एक-दूसरे को तोड़ने की कोशिश करते हैं।

भगवान सबका है

हृदय-शुद्धि का थोड़ा भी कार्य कहीं चलता हो तो वह फूल की खुशबू की भाँति सारे समाज में फैलेगा। उससे दिल को तसल्ली होगी और परमात्मा भी राजी होगा। आज ऐसी सेवा चलती है, जिसके लिए लोगों में आदर नहीं है। उससे न दिल को तसल्ली मिलती है और न परमात्मा ही राजी होते हैं।

आज कुछ वाल्मिकी भाई हमसे मिलने आये थे। उन्होंने कहा 'हम एक मन्दिर बनाना चाहते हैं, जिसके लिए हमें जमीन चाहिए। हमने कुछ थोड़ा इकट्ठा किया है, परन्तु उतना नाकाफी है, इसलिए कुछ और इमदाद चाहिए।' उनकी बात सुनकर हमारे दिल को तसल्ली हुई। हम चाहते हैं कि वाल्मिकीवालों के लिए अलग मन्दिर न होकर दूसरे सभी मन्दिरों में उन्हें प्रवेश मिले। मंदिर में किसीको न आने देना अधर्म है। भगवान का बाना है, पतितपावन। इसलिए पतितों को उसके पास जाने न दिया जाय तो भगवान बेकार बन जायगा। जो भी आदमी सद्भाव से अपने पाप धोने के लिए भगवान के मन्दिर में जाना चाहता है, उसे जाने देना चाहिए। वाल्मिकीवालों ने भगवान की भक्ति के लिए, हृदय की शुद्धि के लिए हमसे जो माँग की, वह जरूर पूरी होनी चाहिए।

इन्सान का दिल प्रेम का प्यासा है

इन दिनों हम लोग संगदिल बन गये हैं। अपने आस-पास के लोगों को क्या दुःख है, यह ढूँढ़ने नहीं जाते और कहीं दीख पड़े तो आँखें बन्द कर लेते हैं। घर में खाना खाते समय भी दरवाजा बन्द कर लेते हैं, ताकि कोई न झाँके। क्योंकि हम जानते हैं कि आस-पास में गरीब, दुःखी लोग हैं, जिनकी तरफ हम ध्यान नहीं देते हैं। परिणाम यह होता है कि हम खयाल ही नहीं करते हैं कि समाज किस हालत में है। हिन्दुस्तान में गुर्बत बहुत ज्यादा है, हम सब गरीब हैं। लेकिन इन्सान इन्सान को कुछ हमदर्दी बताये, प्यार की अलामत के तौर पर कुछ थोड़ी मदद करे तो उससे भी तसल्ली होती है। किसीका पेट दुखता है तो वह दुःख तो उसे ही भोगना पड़ता है। हम उसका दर्द तो ले नहीं सकते, फिर भी हम उसे हमदर्दी बतायें, मीठा बोलें तो उसे कितनी तसल्ली हो जाती है ! इन्सान जानता है कि मेरा सारा भार भगवान पर है। वही मुझे मदद करनेवाला है, पाप से छुड़ानेवाला है। लेकिन कोई हमदर्दी दिखाये तो उससे इन्सान को लगता है कि दुनिया में मेरा भी कोई है, मैं बिलकुल अकेला, परित्यक्त नहीं हूँ। जो सेवा नहीं कर सकता है, वह भी किसी बीमार से मिलने जाय तो उसके जी को तसल्ली होती है। कोई मरनेवाला है और उसका मित्र उससे मिलने जाता है तो उसे सन्तोष होता है और उसकी आँखों में आँसू आ जाते हैं। वह कहता है कि 'मैं जा रहा हूँ, मुझसे कुछ कसूर हुआ हो तो मुआफ करना।' मित्र को भी तसल्ली होती है कि मैं उसे देखने गया था। अगर उससे पूछा जाय कि वह जानेवाला था और तू उसे रोक नहीं सकता था, तब फिर तूने वहाँ जाकर क्या किया ? तो वह कहेगा कि मैं अपने प्यारे मित्र को मरने से पहले देख सका, उसे हमदर्दी पहुँचा सका, इसीमें मुझे तसल्ली है। इस तरह इन्सान का दिल प्रेम का प्यासा है।

मसला मेरा नहीं, आपका है

कल एक भाई ने बिलकुल बेजान सवाल पूछा कि आप लगातार घूमते ही रहते हैं तो क्या आपके घूमने से मसला हल होगा ? मैंने जवाब दिया, मुझसे क्या मसला हल होगा, मेरा ही मसला हल होगा। मैं कल यहाँसे चलकर अगले पड़ाव जाना चाहता हूँ, लेकिन मुमकिन है कि मैं न जा सकूँ और आपको यहींपर मेरा कब्रिस्तान बनाना पड़े। मैं कौन हूँ मसला हल करनेवाला ? मैं तो जरा हमदर्दी, प्यार दिखाता हूँ। मैं बचपन से ब्रह्मचारी हूँ। मेरे कोई बाल-बच्चे नहीं हैं। मैं यहाँ से चला जाऊँगा तो मेरी यहाँ पर कोई आसक्ति नहीं रह जायगी।

मसला आपका है और आप ही उसे हल करनेवाले हैं। जैसे चुनाव में हर कोई काम करता है, वैसे भूदान में काम करें तो देखते-देखते मसला हल हो जायगा। लेकिन आप नहीं करना चाहें तो मसला हल कैसे होगा ? मसला मेरा नहीं है, आपका है।

मैं जानता हूँ कि भगवान रामचन्द्र आये, उन्होंने खूब काम किया, दुनिया की बहुत सेवा की, लेकिन दुनिया के मसले कायम ही-रहे। फिर भगवान कृष्ण आये। उन्होंने भी खूब सेवा की। लेकिन मसले कायम रहे। फिर भगवान बुद्ध आये, गुरु नानक आये और इस जमाने में महात्मा गान्धी जैसे महापुरुष आये, जिन्होंने बहुत काम किया और उसीमें वे गये, लेकिन मसले कायम ही हैं। मैं ऐसा मूर्ख नहीं हूँ, जो यह समझूँ कि मैं मसला हल करनेवाला हूँ। रात को मैं सोने जाता हूँ तो मुझे सोने में दो मिनट भी नहीं लगते हैं। दो मिनट में ही बाबा परलोक में चला जाता है। उसे किसी बात की कोई फिक्र नहीं है। क्योंकि वह समझता ही नहीं कि मैं कोई पेचीदा मसला हल करनेवाला हूँ। लोग कहते हैं कि दो दिन की जिन्दगी है, लेकिन मैं तो एक ही दिन की जिन्दगी मानता हूँ। भगवान मुझे जब बुलायें, तब प्यार से हँसते-हँसते उनके पास जाऊँगा। इसलिए समझ लीजिये कि आपके मसले आप ही हल करनेवाले हैं। आप भी तब तक हल नहीं करेंगे, जब तक वह नहीं चाहेगा और वह चाहेगा, तब आप चाहेंगे और करेंगे। चाहने की ताक़त भी आपमें नहीं है। 'हुकुम रजाई चलणा नानक लिखिया नाल।' उसके हुक्म के सिवाय कुछ भी नहीं होता है। उसका हुक्म मुझे हुआ है, इसलिए मैं घूमता हूँ। मैं कल मर जाऊँगा तो उसकी गोद में लेट जाऊँगा और बिलकुल बेखौफ़ होकर उससे कहूँगा कि तू मेरी परख कर।

गजनी का सबक़

दुनिया में रावण, नैपोलियन, हिटलर जैसे बड़े-बड़े सियासतदाँ आये। उन्होंने क्या मसला हल किया ? ये बड़े-बड़े सल्तनतवाले हम-हम करके घमंड में रहते हैं, लेकिन जब वे भगवान के पास पहुँचते हैं तो क्या उन्हें तसल्ली मिलती है ? महमूद गज़नवी हिंदुस्तान पर सत्रह दफा हमला करके तरह-तरह के सफेद, लाल, पीले पत्थर जिन्हें हीरा, माणिक, सोना कहा जाता है लूटकर ले गया। जब वह मरने की तैयारी में था, तब उसने अपने नौकरों से कहा कि मुझे एक दफा मेरा जखीरा, भंडार दिखाओ। नौकर उसे एक-एक कोठरी के पास ले गये और दरवाजा खोलकर कहने लगे कि ये देखिये आपके हीरे, पन्ने, माणिक, नीलम ! सब देखकर वह रोने लगा। उसने कहा कि अब मुझे यह सब छोड़कर जाना पड़ेगा। ये पत्थर मेरे काम नहीं आयेंगे, मुझे नहीं बचायेंगे। इस तरह वह घमंडी बादशाह सारी दुनिया को लूटकर तरह-तरह के पत्थर इकट्ठा कर सका, लेकिन प्यार नहीं पा सका, इसलिए दुनिया से जाते समय रोते हुए गया। हम नहीं चाहते कि हम परमेश्वर के पास जाते समय रोते हुए जायँ। हम चाहते हैं कि हँसते हुए जायँ। जिसने शुद्ध भाव से दुनिया की सेवा की, वह हँसते हुए दुनिया छोड़ेगा।

मेरा दिल रोता है

स्वराज्य के बाद हमने कुल सार्वजनिक सेवा का जिम्मा सरकार पर सौंपा। धार्मिक कार्य का कुछ लोगों पर सौंपा और अपने जिम्मे खाना, पीना, सोना, झगड़े करना, इसके सिवाय और कुछ नहीं रखा। देश की यह हालत देखकर मेरा दिल रोता है। हमें सोचना चाहिए कि भगवान ने हमें जबान, हाथ और हमदर्द दिल दिया है, जो जानवरों को नहीं दिया। हाथ का और जबान का हम अच्छा उपयोग भी कर सकते हैं और बुरा भी। हाथ से किसीको मदद कर सकते हैं, गिरे हुए को उठा सकते हैं, प्रणाम कर सकते हैं और तमाचा भी मार सकते हैं, गिरा भी सकते हैं। जबान से राम नाम ले सकते हैं, सत्य बोल सकते हैं और किसीको गाली भी दे सकते हैं। हमारा दिल ऐसा हमदर्द है कि हम हमारी जाति का ही नहीं, बल्कि जानवरों का भी दुःख नहीं देख सकते। हमें चाहिए कि भगवान की इन सब देनों का उपयोग अच्छे काम में करें। हम सब सुख की कोशिश करते हैं, लेकिन पाते हैं दुःख। जाना चाहते हैं देहली और पहुँचते हैं श्रीनगर। यह इसलिए होता है, क्योंकि दिल एक रास्ता चाहता है, लेकिन पाँव दूसरे रास्ते से चल रहे हैं। जो अपना सुख चाहेगा, वह दुःख ही पायेगा। सुख का रास्ता है दूसरों का सुख चाहना। तुलसीदास ने एक सुन्दर चौपाई में यही कहा है :

'परहित बस जिनके मन माहीं।
तिन कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं।'

जिनके मन में दूसरों के कल्याण की बात बैठी है, उनके लिए इस दुनिया में कुछ भी दुर्लभ नहीं है, उन्हें हर चीज हासिल हो सकती है। दिल की तसल्ली, अंतःसमाधान हासिल हो सकता है। आप में से चंद भाइयों के दिल में भी यह बात पैठ जाय, तो मैं समझूंगा कि मैं यहाँ दो दिन रहा, उसका पूरा फल मिला।

मैं और मेरी माँ !

आपके दान से भी मैं आपके प्यार की ज्यादा कीमत करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरा विचार आपके ध्यान में आ जाय और आप परोपकार का व्रत लें। दिखावे के लिए नहीं, बल्कि शुद्ध भाव से, दो घंटे भी सेवा के लिए दें तो आपके दिल को पूरी तसल्ली हासिल होगी। फिर अन्दर से आवाज आयेगी 'शाबास ! तूने अच्छा काम किया।' छोटा बच्चा अच्छा काम करता है तो माँ उसकी पीठ थप-थपाकर 'शाबास' कहती है। वह 'शाबास' कहनेवाला हमारे अन्दर ही पड़ा है और हमसे कुछ भी अच्छा काम हो तो अन्दर से आवाज आती है। पड़ोसी के घर की बहन बीमार होती तो मेरी माँ उनके यहाँकी रसोई बनाती थी। पहले वह अपने घर की रसोई करती थी और फिर दूसरे के घर जाकर खाना बनाती थी। उसका ऐसा परोपकारी स्वभाव था, लेकिन मैंने उसे एक दिन मज़ाक में कहा "माँ तू बड़ी स्वार्थी है। अपने घर की रसोई तो पहले कर लेती है और बाद में दूसरे की करती है।" उसने मुझे सुनाया "बेटा, तू तो लड़का है, तू जानता नहीं। बात यह है कि किसीके घर २-४ दिन ही तो जाने का मौका मिलता है। मैं वहाँ देरी से इसलिए जाती हूँ, क्योंकि उन लोगों को ताजी रसोई, गरम खाना मिले।" पड़ोसी के घर पर रसोई कर देना कोई बड़ी सेवा नहीं है, छोटी-सी ही सेवा है, उसके लिए कोई उसे मानपत्र नहीं देगा। लेकिन दूसरे के दिये हुए मानपत्र को क्या चाटते हो ? अन्दर से आवाज आनी चाहिए 'शाबास'। मेरी माँ को दिल की तसल्ली हासिल हुई थी। मरते समय जब मैंने उससे पूछा कि क्या समाधान है तो उसने जवाब दिया कि पूरा समाधान है। इस तरह वह पूरा समाधान पाकर गयी। उस समय उसका नाम तो मशहूर नहीं हुआ। अब इन दस साल में मेरा नाम मशहूर हुआ है, क्योंकि कुछ काम चला है। लेकिन मैं भगवान के पास जाऊँगा तो वहाँ मेरी माँ द्वारा की हुई सेवा की कीमत मेरी सेवा से ज्यादा होगी। क्योंकि

www.vinoba.in

वहाँ गुण की परीक्षा होती है, ढेर काम की नहीं, 'क्वालिटी' देखी जाती है, 'क्वान्टिटी' नहीं। आखिर संख्या में धरा क्या है ?

हृदय-शुद्धि का महत्त्व

एक मशहूर कहानी है कि सत्यभामा भगवान श्रीकृष्ण को तौलना चाहती थी। एक पलड़े में भगवान बैठे और दूसरे पलड़े में वह अपने सोने के गहने डालती गयी। फिर भी भगवान का पलड़ा भारी ही रहा। आखिर वह थक गयी। उधर से रुक्मिणी आयी और उसने देखा कि सत्यभामा परेशान है तो फिर उसने सोने के गहनों पर तुलसी का एक पत्ता डाला और झट भगवान का पलड़ा हल्का हो गया, पत्तेवाला पलड़ा भारी हो गया। तुलसी के उस पत्ते में कोई वजन तो नहीं था, लेकिन उसमें रुक्मिणी की प्रीति, भक्ति, हृदय की शुद्धि थी। इसलिए तुलसी के उस छोटे से पत्ते का भगवान के पास बहुत ज्यादा वजन था। उसी तरह हृदय-शुद्धि पूर्वक की हुई सेवा की बड़ी कीमत है। ◆◆◆

कल मैंने काकासाहब की बापू पर लिखी हुई एक किताब पढ़ी। उसमें रोमांरोला का एक वाक्य पढ़ा, जिसने मेरा दिल खींच लिया—The less I have the mere I am मेरे पास जितना कम होता है, उतना ही मैं हूँ। यह जो have चलता है, उससे am कम पड़ जाता है। इस वाक्य से चिंतन के लिए एक दालान ही खुल जाता है। ◆

प्रार्थना-प्रवचन

सिंगपुरा (कश्मीर) ३१-७-'५९

प्यार है बिजली, एतबार है बटन, उसे दबाइये तो सही

परसों हम सोपौर में थे, जो एक बहुत बड़ा सियासी मरकज है। वहाँ बहुत लोग आये। उन्होंने हमपर बड़ा प्यार, खूब मुहब्बत बरसायी। आज का यह छोटा-सा गाँव है, लेकिन यहाँ भी हमने वही मुहब्बत देखी। हिन्दुस्तान के मुख्तलिफ सूबों में हमारी यात्रा हुई। हमने हर जगह ऐसा ही प्यार पाया।

प्यार के बावजूद गुर्बत क्यों ?

हमारे मन में यह विचार आता है कि अल्लामियाँ ने जहाँ इतना प्यार बख्शा है, वहाँ इतने झगड़े और इतनी गुर्बत क्यों है ? प्यार है, फिर भी काम क्यों नहीं बन रहा है ? जब इसपर मैं सोचता हूँ, तब मुझे बिजली याद आती है। आपमें से बहुत लोगों ने बिजली नहीं देखी होगी। श्रीनगर में बिजली है। वहाँ घर-घर में बिजली है। बटन दबाया कि बिजली झट घर को रौशन कर देती है। बिजली घर में आयी, फिर भी घर में अँधेरा है। क्यों ? क्योंकि बटन नहीं दबाया है। वैसे ही प्यार हरएक के दिल में खूब भरा है। उसे बाहर लाने के लिए बटन दबाने की तरकीब हाथ में आ जायगी, तब ऐसा कोई शख्स नहीं मिलेगा, जो अपनी दौलत या मेहनत आपको नहीं देगा।

एतबार ही मेरा धन है

प्यार एक बिजली है और बटन है एतबार, विश्वास, यकीन, भरोसा ! इस यकीन के साथ हम दूसरे के पास पहुँचेंगे तो हमें उसके दिल में जगह मिलेगी। आज यह नहीं होता है। इस समय हम एक-दूसरे की तरफ शक-शुबह की निगाह से देखते हैं। अपने बेटे पर, भाई पर प्यार है, वह हम सब महसूस करते हैं। लेकिन वह तो आपके कुनबे के हैं। क्या हम घर के बाहर किसी भाई पर यकीन रखते हैं ? हम एकदम सोचने लग जाते हैं कि वह दूसरी पार्टी का है, दूसरे मजहब का है। न मालूम उसके मन में क्या होगा ? इस तरह मन में शक-शुबह है तो हम एकदिल कैसे बन सकते हैं ? दुराव कायम रहता है तो फिर झगड़े भी पैदा होते हैं। लेकिन अगर हमें एक-दूसरे पर एतबार हो तो जो भी हमसे मिलेगा, वह हमारा प्यारा बन जायगा।

हमारी ही बात लीजिये। हमारा जन्म यहाँसे कहीं दूर हुआ है। लेकिन मौत कहाँ होगी, पता नहीं ! आज अगर यहीं मौत हो जाय तो हमें ऐसा नहीं लगेगा कि अरे ! हमारे मादरे वतन में हमारी मौत नहीं हुई। जहाँ हमारी मौत होगी, वही हमारा वतन। यहाँ हमारे लोग नहीं हैं, ऐसा हमें कतई नहीं लगेगा। बल्कि सभी हमारे ही लोग हैं, यह हमारा ही वतन है, ऐसा ही हमें लगेगा। इस तरह जहाँ हम जाते हैं, वहाँ प्यार लेकर जाते हैं, एतबार लेकर जाते हैं, इसीलिए वह हमारा ही स्थान बन जाता है।

हमें एक भाई ने कहा था कि 'आप कश्मीर जा रहे हैं, लेकिन वहाँ तो जमीन का मसला हल हो चुका है।' हमने कहा "कश्मीर में जमीन मालिक और मुजारों के पास है।" इसपर उस भाई ने कहा "तो फिर आपको जमीन कौन देगा ?" मैंने कहा "देनेवाला जरूर देगा।" और आप देख रहे हैं कि लोग दे रहे हैं। कल क्या हुआ ? मीटिंग में ही लोगों ने दान दिया। हमने गाना गाया, लोगों से भी गवाया। लोगों ने खूब प्यार से गाना गाया। "हमारे गाँव में बेजमीन कोई न रहेगा, कोई न रहेगा।" सभी दान भी दे रहे थे। हमें ऐसा एतबार होना चाहिए। [चालू]

भूल-सुधार

◆ विनोबा-प्रवचन वर्ष ३, अंक ९५, पृष्ठ ६०७ पर प्रकाशित 'गांधीजी' शीर्षक के अन्तर्गत द्वितीय पंक्ति में 'वैर' छपा है, उसके स्थान पर 'दूर' पढ़ने की कृपा करें।

◆ अंक १०३, पृष्ठ ६५०, कालम २ पर प्रकाशित उद्धरण है एक 'संस्थाओं में सामुदायिक प्रार्थना का स्थान'। प्रेस की भूल के कारण उसके चारों तरफ रूल नहीं लगाया जा सका है। हमारे जागरूक पाठक उसे चालू प्रवचन से अलग समझ लेंगे। ◆

अनुक्रम

१. सेवा का जिम्मा स्वयं उठायें और शुद्ध हृदय से सेवा करें.
ऊधमपुर ३ सितम्बर '५९ पृष्ठ ६७१
२. प्यार है बिजली, एतबार है बटन, उसे दबाइये तो सही.
सिंगपुर ३१ जुलाई '५९" ६७४

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी

www.vinoba.in